वर्षप्रतिपदा

हिन्दू कालगणना के वैज्ञानिक तथ्य

गोपाल माहेश्वरी

वर्ष प्रतिपदा

हिन्दू कालगणना के वैज्ञानिक तथ्य

गोपाल माहेश्वरी

सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज, झण्डेवाला, नई दिल्ली - 110055

वर्ष प्रतिपदा

हिन्दू कालगणना के वैज्ञानिक तथ्य

प्रकाशक

सुरुचि प्रकाशन
केशव कुंज, झण्डेवाला,
नई दिल्ली - 110055
दूरभाष : 011-23514672, 23634561
Email : suruchiprakashan@gmail.com
Website : www.suruchiprakashan.in

© सुरुचि प्रकाशन

प्रथम संस्करण : मार्च, 2019

मूल्य : ₹ 40

मुद्रक : भारत ऑफसेट वर्क्स

ISBN : 978-93-88608-14-5

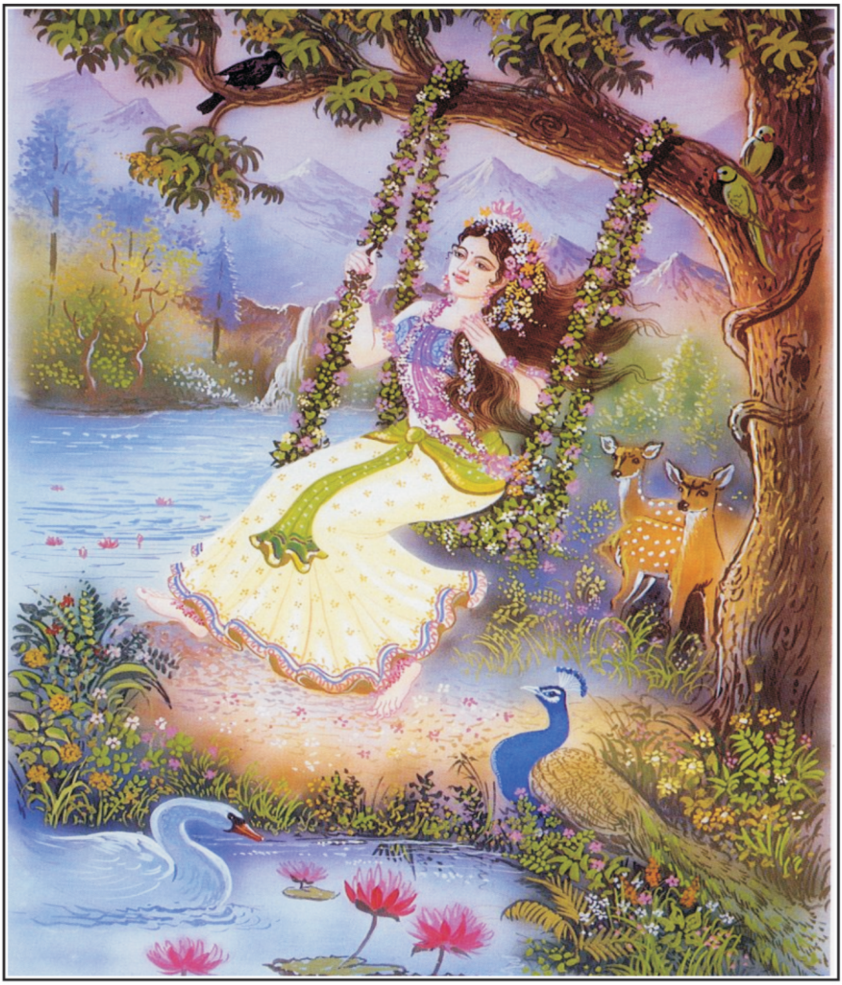

वसन्त का वैभव – नव किसलयों का प्रस्फुटन
नवचैतन्य, नवोत्थान, नवजीवन का प्रारम्भ
मधुमास के रूप में प्रकृति नया शृंगार करती है।

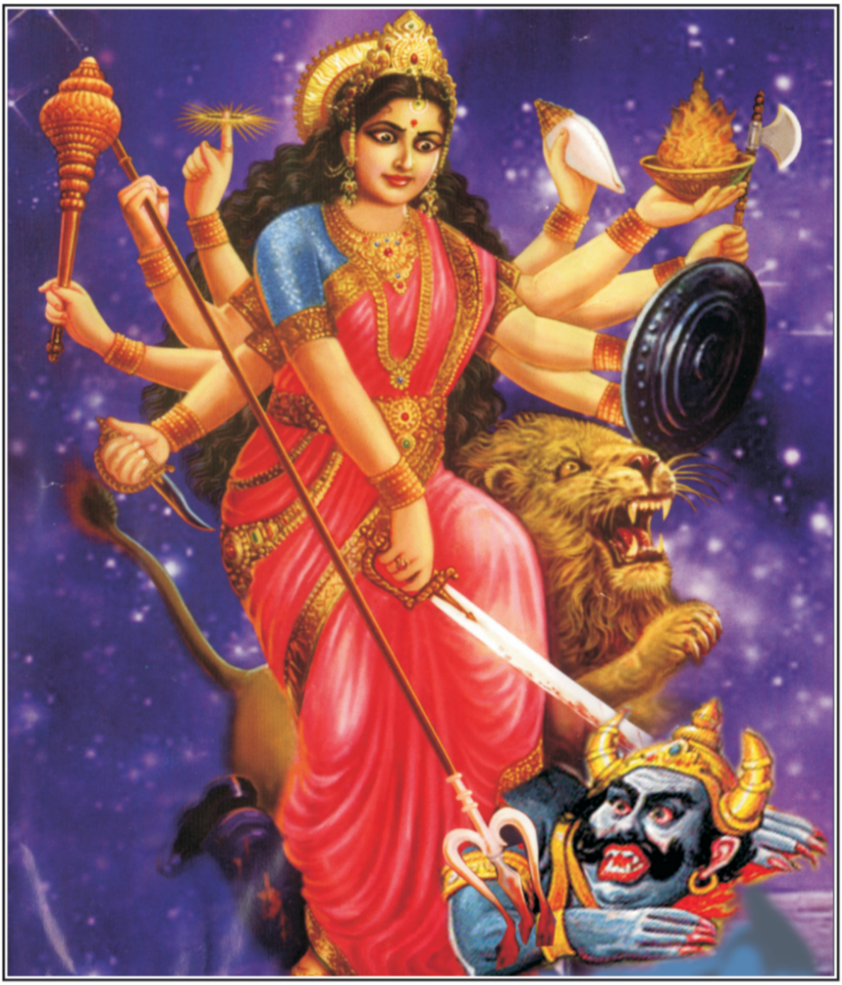

वासन्तिक नवरात्र का प्रारम्भ

वर्ष प्रतिपदा से नौ दिवसीय शक्ति पर्व
समाज **शक्ति की भक्ति** में लीन होता है

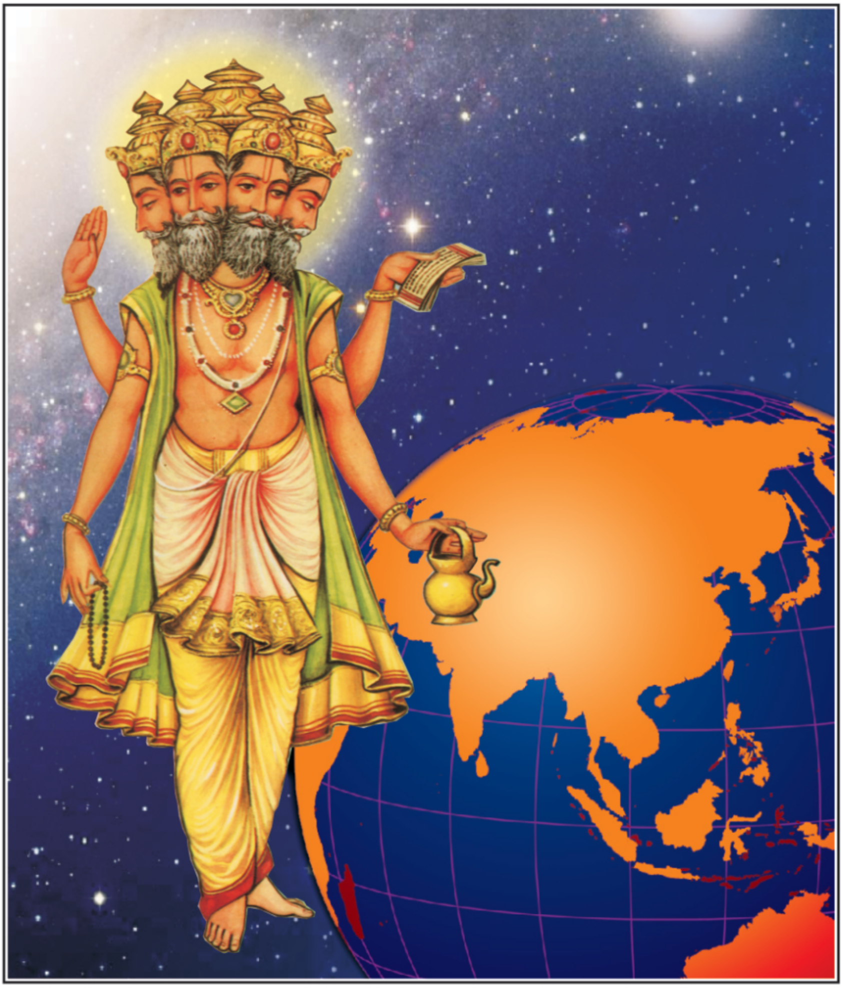

चैत्र मासि जगत् ब्रह्मा सगृज प्रथमेऽह्नि ।
शुक्ल पक्ष समग्रन्तु तथा सूर्योदये सति ।। हिमाद्रि ज्योतिष

भारतीय (हिन्दू) नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
सतयुग में इसी दिन हुआ था ब्रह्माजी द्वारा सृष्टि की रचना का प्रारंभ

सृष्टि के प्रथम राष्ट्र भारतवर्ष का उदय

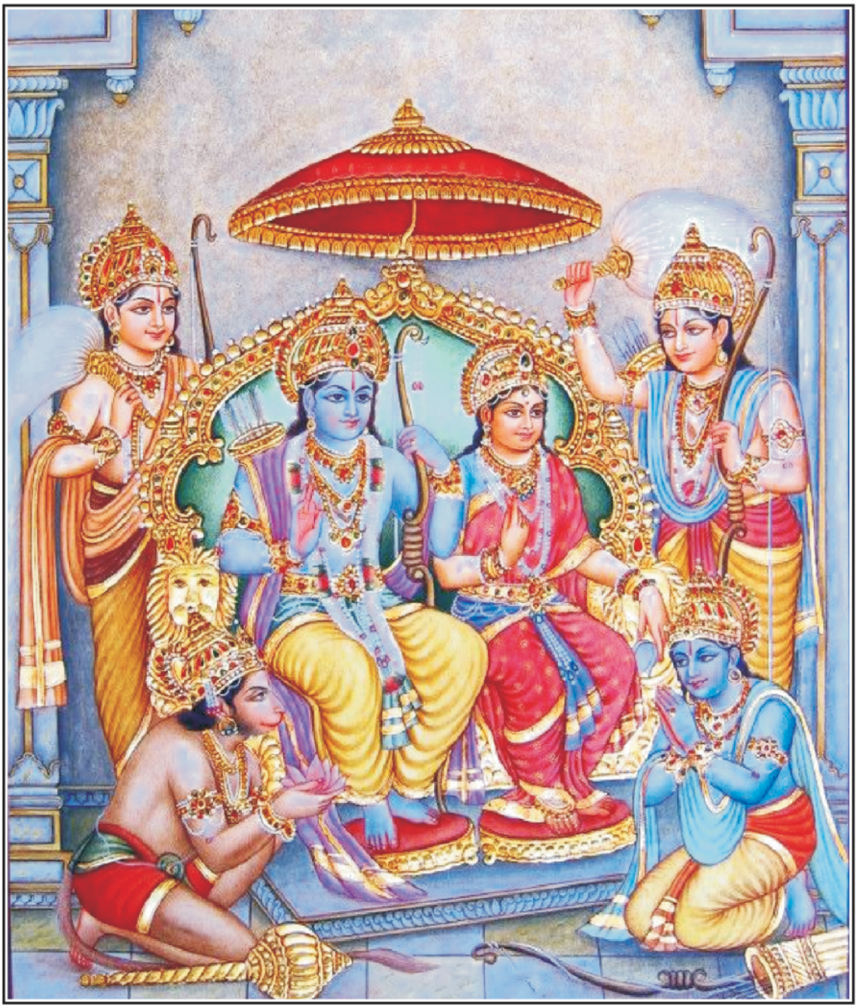

त्रेतायुग में प्रभु श्रीराम का राज्याभिषेक

भगवान श्रीराम द्वारा वन नरों (वानरों) का विशाल सशक्त संगठन बनाकर राक्षसी आतंक का विनाश किया गया।
अधर्म पर धर्म की विजय हुई और रामराज्य की स्थापना हुई।

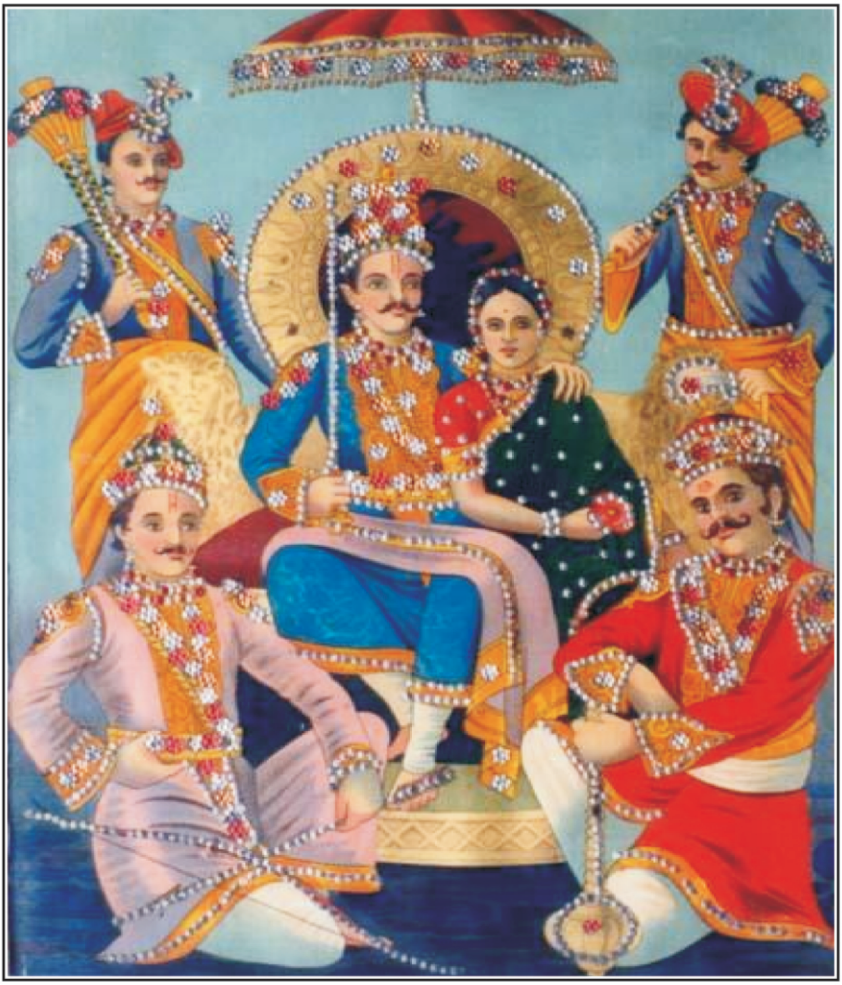

द्वापर युग में युधिष्ठिर संवत् का प्रारंभ

महाभारत के धर्मयुद्ध में धर्म की विजय हुई और
राजसूय यज्ञ के साथ युधिष्ठिर संवत् प्रारम्भ हुआ।

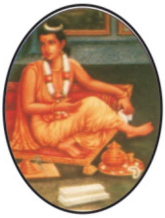

कालिदास
(महाकवि)

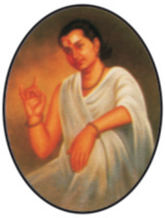

शंकु
(शिक्षा शास्त्री)

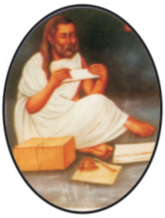

अमरसिंह
(साहित्यकार)

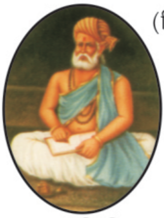

वराहमिहिर
(अंतरिक्ष विज्ञानी)

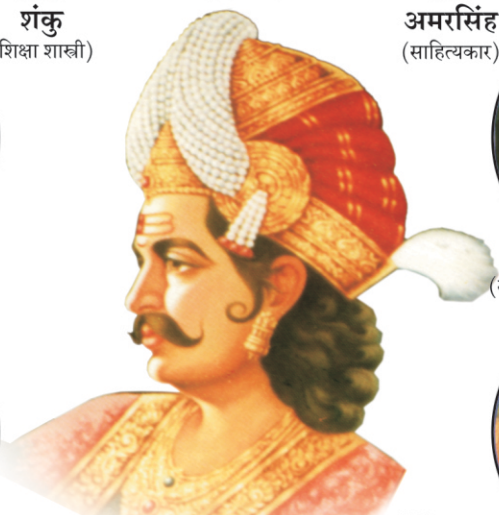

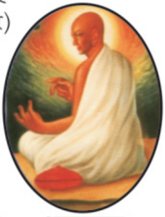

क्षपणक
(न्यायविद् दर्शन शास्त्री)

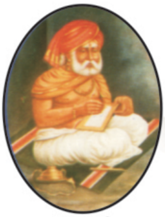

घटकर्पर
(कवि)

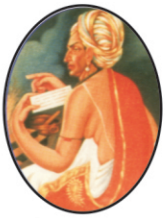

वेतालभट्ट
(नीतिकार)

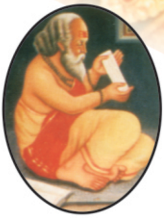

वररुचि
(व्याकरणाचार्य)

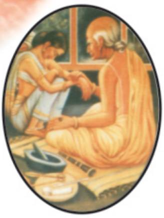

धन्वन्तरि
(चिकित्सक)

कलियुग में विक्रम संवत् का प्रारंभ सम्राट विक्रमादित्य की नवरत्न सभा

हिन्दू कालगणना
सूक्ष्मतम से विराटतम

श्रीमद्भागवत महापुराण में प्रसंग आता है - राजा परीक्षित महामुनि शुकदेवजी से प्रश्न पूछते हैं कि

**‘‘काल क्या है ?
उसका सूक्ष्मतम और महत्तम रूप क्या है ? ’’**

आज के आधुनिक युग में भी हम जानते हैं कि काल अमूर्त तत्व है। घटने वाली घटनाओं से हम उसे जानते हैं।

तब आज से हजारों वर्ष पूर्व शुकदेव मुनि ने कहा था - **‘‘विषयों का रूपान्तरण** (बदलना) **ही काल का आकार है। उसी को निश्चित बना वह काल तत्व अपने को अभिव्यक्त करता है। वह अव्यक्त को व्यक्त करता है।’’**

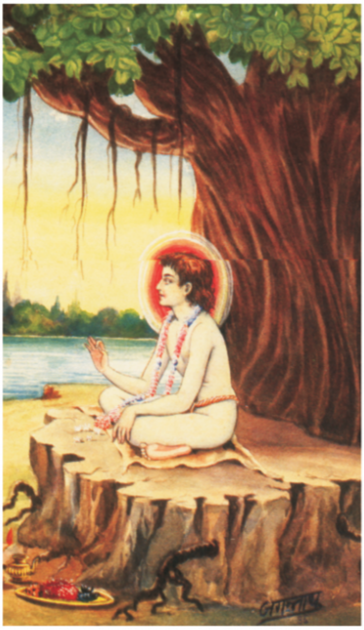

हिन्दू कालगणना
सूक्ष्मतम से विराटतम

अंतरिक्ष विज्ञानी आर्यभट्ट

हिन्दू कालगणना सूर्य एवं चन्द्र दोनों की गति पर आधारित विश्व की सबसे व्यापक कालगणना है।

क्यों आवश्यक हुई इतनी व्यापक कालगणना?

हमारे पूर्वज आकाशगंगाओं को भी भेदकर लोक-लोकान्तर में आवागमन किया करते थे। अत: उन्हें काल की इतनी व्यापक गणनाएँ करना आवश्यक थीं।

इसे हास्यास्पद कल्पना न मानिये। क्योंकि ऐसा मानकर आप उन वैज्ञानिकों का भी उपहास करेंगे, जो आज चंद्रमा पर पहुँच चुके हैं और अन्य ग्रहों पर जाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

महामुनि शुक वर्णित

२ परमाणु = १ अणु
३ अणु = १ त्रसरेणु
३ त्रसरेणु = १त्रुटि
१०० त्रुटि = १वेध
३ वेध = १लव
३ लव = १ निमेष
३ निमेष = १क्षण
५ क्षण = १ काष्ठा
३० काष्ठा = १ कला
१५ काष्ठा = १ लघु
१५ लघु = १नाड़िका
२ नाड़िका = १ मुहूर्त
३० कला = १ मुहूर्त
३० मुहूर्त = १ दिनरात (अहोरात्र)
७ दिनरात = १ सप्ताह
२ सप्ताह = १ पक्ष
२ पक्ष = १मास
२ मास = १ ऋतु
३ ऋतु = १ अयन (६ माह)
२ अयन = १ वर्ष

हिन्दू कालगणना
सूक्ष्मतम से विराटतम

कलियुग की अवधि = ४,३२,००० वर्ष
द्वापरयुग की अवधि (कलियुग से दुगनी) = ८,६४,००० वर्ष
त्रेतायुग की अवधि (कलियुग से तीन गुनी) = १२,९६,००० वर्ष
सतयुग की अवधि (कलियुग से चार गुनी) = १७,२८,००० वर्ष

१ चतुर्युगी (चारों युगों का योग) = ४३,२०,०००वर्ष
१ मन्वन्तर = ७१ चतुर्युगी
अर्थात (१ मन्वन्तर = ७१ X ४३,२०,०००वर्ष) = ३,०६,७२,००० वर्ष

दो मन्वन्तर के बीच एक संध्यांश होता है। जो एक सतयुग के बराबर होता है।

संध्यांश = १७,२८,००० वर्ष
१ कल्प = १४ मन्वन्तर व संध्यांश के १५ सतयुग का योग
अर्थात्(१४ X ३,०६,७२,००० वर्ष) + (१५ X १७,२८,०००वर्ष)
१ कल्प = ४,३२,००,००,०००वर्ष
(४अरब ३२ करोड़ वर्ष)

यह ब्रह्मा का १ दिन और उतनी ही अवधि की रात होती है।

१ दिन रात (४ अरब ३२ करोड़ वर्ष X २) = ८,६४,००,००,०००वर्ष
ब्रह्मा का १ वर्ष = ३१,१०,४०,००,००,०००
(८,६४,००,००,०००वर्ष X ३६०) (३१ खरब १०अरब ४० करोड़ वर्ष)
ब्रह्मा के १०० वर्ष = **विष्णु का एक निमेष**
(३१ खरब १० अरब ४० करोड़ वर्ष X १००) = ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष
विष्णु के १०० वर्ष = **रुद्र का १ दिन**

रुद्र स्वयं कालरूप है और अनंत है,
इसीलिये कहा जाता है - काल अनंतानंत है।

100
मेघनाद साहा MEGHNAD SAHA
भारत
INDIA
1993

स्वतन्त्र भारत की सरकार ने राष्ट्रीय पंचाङ्ग निश्चित करने के लिए प्रसिद्ध वैज्ञानिक **डॉ. मेघनाथ साहा** की अध्यक्षता में ''केलेण्डर रिफार्म कमेटी'' का गठन किया था।

१९५२ में ''साइंस एण्ड कल्चर'' पत्रिका में प्रकाशित रिपोर्ट–

१. ईस्वी सन् का मौलिक सम्बन्ध ईसाई पन्थ से नहीं है। यह तो यूरोप के अर्ध सभ्य कबीलों में ईसा मसीह के बहुत पहले से ही चल रहा था।

२. इसके एक वर्ष में १० महीने और ३०४ दिन होते थे।

३. पुरानी रोमन सभ्यता को भी तब तक ज्ञात नहीं था कि सौर वर्ष और चान्द्रमास की अवधि क्या थी। यही दस महीने का साल वे तब तक चलाते रहे जब तक उनके नेता सेनापति जुलियस सीजर ने इसमें संशोधन नहीं किया।

४. ईसा के ५३० वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद, ईसाई बिशप ने पर्याप्त कल्पनाएँ कर २५ दिसम्बर को ईसा का जन्म दिवस घोषित किया।

५. १५७२ तेरहवें पोप ग्रेगरी महाशय ने केलेण्डर को दस दिन आगे बढ़ा कर ५ अक्टूबर शुक्रवार को १५ अक्टूबर शुक्रवार माना।

६. ब्रिटेन ने इसे दो सौ वर्ष बाद १७७५ में स्वीकार किया। ब्रिटेन ने इसमें ११ दिन की कमी की और ३ सितम्बर को १४ सितम्बर बना दिया।

७. यूरोप के केलेण्डर में २८,२९,३०,३१ दिनों के महिने होते हैं, जो विचित्र हैं। ये न तो किसी खगोलीय गणना पर आधारित हैं और न किसी प्रकृति चक्र पर।

केलेण्डर रिफार्म कमेटी ने विक्रम संवत् को राष्ट्रीय संवत् बनाने की सिफारिश की। वास्तव में विक्रम संवत्, ईसा संवत् से ५७ साल पुराना था।

लेकिन दुर्भाग्यवश... जैसा हमेशा होता आया है...

शोध उपेक्षित रहा, स्वार्थ अपेक्षित हो गया !

अंग्रेजी मानसिकता के नेतृत्व का यह पसन्द नहीं आया।

विदेशीकाल गणनाओं की विसंगतियाँ

चिन्ड्रन्स ब्रिटानिका vo1.3-1964 में कैलेण्डर का इतिहास बताया है –

अंग्रेजी केलेण्डरों में अनेक बार गड़बड़ियाँ हुईं हैं व इनमें कई संशोधन करना पड़े हैं।

इनमें माह की गणना चन्द्र की गति से और वर्ष की गणना सूर्य की गति पर आधारित है। आज इसमें भी आपसी तालमेल नहीं है।

ईसाईमत में ईसामसीह का जन्म इतिहास की निर्णायक घटना है। अतः कालक्रम को B.C.(Bofore Christ) और A.D. (Anno Domini) अर्थात् In the year of our Lord. में बांटा गया। किन्तु यह पद्धति ईसा के जन्म के कुछ सदियों तक प्रचलन में नहीं आई।

रोमन केलेण्डर– आज के ईस्वी सन् का मूल रोमन संवत् है। यह ईसा के जन्म के ७५३ वर्ष पूर्व रोम नगर की स्थापना से प्रारंभ हुआ। तब इसमें १० माह थे (प्रथम माह मार्च से अंतिम माह दिसम्बर तक)। वर्ष होता था ३०४ दिन का।

बाद में राजा नूमा पिम्पोलियस ने दो माह (जनवरी, फरवरी) जोड़ दिये। तब से वर्ष १२ माह अर्थात ३५५ दिन का हो गया।

यह ग्रहों की गति से मेल नहीं खाता था, तो जूलियट सीजर ने इसे ३६५ १/४ दिन का करने का आदेश दे दिया। जिसमें कुछ माह ३० व कुछ ३१ के बनाए और फरवरी २८ का रहा जो चार वर्षो में २९ को होता है।

इस प्रकार यह गणनाएँ प्रारम्भ से ही
अवैज्ञानिक, असंगत, असंतुलित, विवादित एवं काल्पनिक रहीं।

विदेशीकाल गणनाओं की विसंगतियाँ

हिन्दू मासों का नामकरण हुआ नक्षत्रों के नाम पर। जिस मास में जिस नक्षत्र में चन्द्रमा पूर्ण हो, वह मास उसी नक्षत्र के नाम से जाना गया। जबकि विदेशी मासों का नामकरण किसी राजा, देवी देवता, त्यौहार या किसी शब्द के नाम पर हुआ।

अर्थात् खगोलीय सत्य नहीं मानवीय मान्यताओं के आधार पर हुआ।

हिन्दू मास			विदेशी मास		
क्र.	मास	पूर्णिमा का नक्षत्र	क्र.	मास	व्यक्ति /देवता
१.	चैत्र	चित्रा	३.	मार्च	मार्स (मंगल देवता)
२.	वैशाख	विशाखा	४.	अप्रैल	एपरिट ('खुलना' क्रिया)
३.	ज्येष्ठ	ज्येष्ठा	५.	मई	माइमा (रोम की देवी)
४.	अषाढ़	अषाढ़ा	६.	जून	जूनो (स्वर्ग की रानी)
५.	श्रावण	श्रवण	७.	जुलाई	जूलियस सीजर(रोम सम्राट)
६.	भाद्रपद्	भाद्रपद	८.	अगस्त	आगस्टस (रोम का राजा)
७.	आश्विन	आश्विनी	९.	सितम्बर	सप्टम (शब्द)
८.	कार्तिक	कृतिका	१०.	अक्टूबर	आक्टो(शब्द)
९.	मार्गशीर्ष	मृगशिरा	११.	नवम्बर	नोवम (शब्द)
१०.	पौष	पुष्य	१२.	दिसम्बर	डीसेस (शब्द)
११.	माघ	मघा	१.	जनवरी	जेनस (रोम के देवता)
१२.	फाल्गुन	फाल्गुनी	२.	फरवरी	फेब्रुआ (रोमन त्यौहार)

इन विदेशी मासों का क्रम एवं संख्या तो बदलती ही रही।

विदेशी कालगणना

रोमन लिपि के अंको में बड़ी संख्या व्यक्त करने की कोई व्यवस्था ही नहीं है। बड़ी संख्या को न तो वे गिन सकते थे, न ही उसे लिख सकते थे। यह तो ठीक है कि घड़ी में बारह ही बजते है, ४८ तक बजते तो रोमन लिपि में तो घड़ी घड़ियाल बन जाती।

प्रत्येक भारतीय त्यौहार चन्द्र या सूर्य की गति का अवलोकन व गणना करके निर्धारित होता है। जैसे राखी और होली पूर्णिमा को ही आएगी और पूरा चन्द्रमा दिखेगा सबको मालूम है । कृष्ण जन्म अष्टमी को तो राम जन्म नवमी को मनेगा ओर दीपावली अमावस्या को ही होगी। मकर संक्रान्ति पर अयन परिवर्तन स्पष्ट अनुभव होगा हमारी छाया से।

है न !, वैज्ञानिक पद्धति।

अब अमेरिका और यूरोप वासियों से पूछिये कि २५ दिसम्बर को नक्षत्रों की कोई निश्चित अवस्था रहती है क्या ? अच्छा ! सबकी नहीं तो सिर्फ सूर्य और चंद्रमा की स्थिति ही बता दीजिये?
उत्तर उनके पास है ही नही तो देंगे कहाँ से ?

यही नहीं १ जनवरी या ३१ दिसम्बर को भी नया वर्ष मानने का कोई खगोलीय प्रमाण नहीं केवल अन्धकार है तर्कशून्य मान्यताओं का ।

आप ही बताएँ
हाईटेक वैज्ञानिक सभ्यता किसकी ?
अपनी या.... उनकी ??

क्या हमारे पूर्वज सृष्टि के भेद जानते थे ?

प्रकाश की गति

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में दी हुई ऋचा का वर्णन अपने भाष्य में करते हुए सायणाचार्य कहते हैं -

योजनानां सहस्त्रे द्वै द्वैशते द्वै च योजने ।
एकेन निमिषार्धेन क्रममाण नमोऽस्तु ते ।।

अर्थात आधे निमेष में २२०२ योजन का मार्गक्रमण करने वाले प्रकाश तुम्हें प्रणाम । इस आधार पर प्रकाश की गति १,८८,७६६.६७ मील प्रति सेकेण्ड होती है जो आधुनिक विज्ञान द्वारा बताये गये मान के निकट है ।

गुरुत्वाकर्षण

न्यूटन से ५५० वर्ष पूर्व भास्कराचार्य ने अपनी पुत्री लीलावती को एक श्लोक सिखाया :

मरुच्चलो भरचला स्वभावतो यतो विचित्रावतवस्तु शक्यत:
आकृष्टिशक्तिश्च मही तया यत् स्वस्थं
गुरु स्वाभिमुखं स्वशक्तया । आकृष्यते तत्पततीव भाति
समेसमन्तात् क्व पतत्वियं खे ।। भुवनकोश ५, ६

अर्थात पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है । पृथ्वी अपनी आकर्षण शक्ति से भारी पदार्थों को अपनी ओर खींचती है और आकर्षण के कारण वह जमीन पर गिरते हैं ।

क्या पृथ्वी गोल है ?

भास्कराचार्य आगे कहते हैं -

समो यत: स्यात्परिधे: शतांश: । पृथ्वी च पृथ्वी नितरां तनीयान् ।
नरश्च तत्पृष्ठगतस्य कृत्स्ना, समेव तस्य प्रतिभात्यत: सा ।। भुवनकोश १३

विशाल पृथ्वी का एक छोटा सा हिस्सा हमें दिखाई देता है जो हमें सपाट दिखता है, पर वास्तव में यह गोल है ।

पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है ?

आज से १५०० वर्ष पहले हुए आर्यभट्ट ने भूमि अपने अक्ष पर घूमती है इसका वर्णन इस प्रकार किया है -

अनुलोमगतिनौंस्थ: पश्यत्यचलम् विलोमगम् यद्वत् ।
अचलानि भानि तद्वत् सम पश्चिमगानि लंकायाम् ।। आर्यभट्टीय

अर्थात नाव में यात्रा करने वाला जिस प्रकार किनारे स्थिर रहने वाले चट्टान, पेड़ इत्यादि को विरुद्ध दिशा में भागते देखता है, उसी प्रकार नक्षत्र लंका में सीधे पूर्व से पश्चिम की ओर सरकते देखे जा सकते हैं

हाँ ! हमारे ही पूर्वज सृष्टि के भेद जानते थे ?

काल की सापेक्षता (Relativity)

यहूदी वैज्ञानिक आइंस्टीन ने अपने सापेक्षता सिद्धांत में दिक् व काल की सापेक्षता प्रतिपादित की। उसने कहा, विभिन्न ग्रहों पर समय की अवधारणा भिन्न-भिन्न होती है। काल का सम्बन्ध ग्रहों की गति से रहता है। इस प्रकार अलग-अलग ग्रहों पर समय का माप भिन्न-भिन्न रहता है। समय छोटा-बड़ा रहता है। इसकी जानकारी के संकेत हमारे ग्रंथों में मिलते हैं।

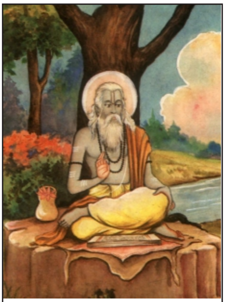
पुराण प्रणेता महर्षि वेदव्यास

पुराणों में कथा आती है कि *महाराजा रैवतक की पुत्री की ऊँचाई बहुत अधिक थी, अत: उसके अनुकूल वर नहीं मिलता था। इसके समाधान हेतु राजा योग बल से अपनी पुत्री को लेकर ब्रह्मलोक गये। वे जब ब्रह्मलोक पहुँचे, तब वहाँ गंधर्वगान चल रहा था। अत: वे कुछ क्षण रुके। जब गान पूरा हुआ, तो ब्रह्मा ने राजा को देखा और 'पूछा कैसे आना हुआ ?' राजा ने कहा मेरी पुत्री के लिए किसी वर को आपने जन्म दिया है या नहीं ? ब्रह्माजी जोर से हँसे और कहा, जितनी देर तुमने यहाँ गाना सुना, उतने समय में पृथ्वी पर २७ चतुर्युगी (१ चतुर्युगी = ४३ लाख २० हजार वर्ष) बीत चुकी हैं और २८वाँ द्वापर समाप्त होने वाला है। तुम वहाँ जाओ और कृष्ण के भाई बलराम से इसका विवाह कर देना साथ ही उन्होंने कहा कि यह अच्छा हुआ कि रेवती को तुम अपने साथ लेकर आये। इस कारण इसकी उम्र नहीं बढ़ी।*

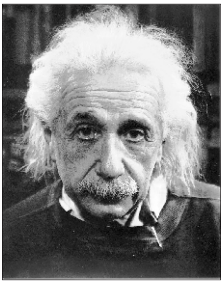

आईंस्टीन ने भी कहा कि यदि एक व्यक्ति लगभग प्रकाश की गति से (याने १ लाख ६० हजार मील प्रति सेकेंड लगभग) से चलने वाले यान में बैठकर **देवयानी आकाशगंगा** (Andromedia Galaxy) की ओर जाकर वापस आये तो उसकी उम्र में केवल ५६ वर्ष बढ़ेंगे, किंतु उस अवधि में पृथ्वी पर ४० लाख वर्ष बीत गये होंगे।

योग वसिष्ठ आदि ग्रंथों में इन्हीं सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन है !

क्या भारतीय कालगणना प्रचलन में है ?

एक अंग्रेज अधिकारी ने पं. मदन मोहन मालवीय से पूछा कि ''कुम्भ में इतना बड़ा जन सैलाब बगैर किसी निमंत्रण–पत्र के कैसे आ जाता है ?'' पंडितजी ने उत्तर दिया ''छ: आने के पंचाङ्ग से !''

अपने देश के गाँवों में, शहरों में, वनों में, पहाड़ों पर या भारत के बाहर सैकड़ों मील दूर विदेशों में हिन्दू कहीं भी रहे वह पंचांग जानता है।अपने त्यौहार, उत्सव, कुम्भ, विभिन्न देवस्थानों पर लगने वाले मेले सभी की तिथियाँ बगैर आमंत्रण, सूचना के उसे मालूम होती हैं । यही नहीं सौ वर्ष बाद किस दिन कहाँ कुम्भ होगा, दीपावली कब होगी, सूर्य एवं चंद्र ग्रहण कब होंगे यह भी ज्योतिषी किसी भी समय बता सकते हैं ।

पद्मिनीनायके मेषे कुंभराशि गते गुरो ।
गंगाद्वारे भवेद्‌योग : कुंभनामा तदोत्तमम् ।।
(सूर्य मेष राशि में और गुरु कुंभ राशि में होने पर हरिद्वार में कुंभ होता है ।)

मकरे च दिनानाथे वृष राशि स्थिते गुरो ।
प्रयागे कुम्भ योगे वै माघ मासे विधुक्षये ।।
(मकर राशि में सूर्य, वृषभ में गुरु होने पर माघ मास के कृष्ण पक्ष में प्रयाग में कुंभ होता है।),

कर्के गुरुस्तथा भानुश्चन्द्र क्षयेतथा: ।
गोदावर्या तदा कुंभो जायतेऽवनिमंडले ।।
(कर्क राशि के गुरु और सूर्य हों तथा कृष्ण पक्ष हो तब गोदावरी तट पर नासिक में कुंभ होगा ।)

मेष राशि गते सूर्ये सिंह राश्यांबृहस्पतिः ।
अवन्तिकायां भवेत् कुंभ : सदामुक्तिप्रदायक :।।
(मेष राशि में सूर्य कुंभ में गुरु हो तब अवन्तिका (उज्जैन)में कुंभ होगा ।)

पूरे विश्व जहाँ जहाँ भी हिन्दू रहते हैं दीपावली, होली, राखी, दशहरा एक ही तिथि में होंगे। एक ही दिन मनेगी महावीर जयंती, गुरुनानक जयंती और बुद्धपूर्णिमा भी।

अरब और पश्चिम के त्यौहारों में नक्षत्रों की स्थिति एक जैसी नहीं होती ।

हमारे पास है गणित वर्षों बाद का भी, कि किस दिन कब उगेगा सूरज और कब दिखेगा चांद... क्या उन्हें पता है ?

क्या भारतीय कालगणना प्रचलन में है ?

हां ! सदियों से हमारे पूर्वज प्रत्येक शुभ कार्य, यज्ञ हवन आदि आरम्भ करने से पूर्व जो संकल्प लिया जाता है उसमें इस कालगणना का उपयोग होता है

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु : । ॐ नमः परमात्मने, श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याघा श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवराह कल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टविंशतितमे, कलियुगे, कलिप्रथम चरणे....

अर्थात् विष्णु की आज्ञा से प्रारंभ ब्रह्मा के द्वितीय परार्ध से लेकर काल की हर इकाई का नाम लेकर उसकी गणना बताकर जिस समय संकल्प ले रहे है तब की तिथि, वार, समय का उल्लेख करते हैं। साथ ही उस समय कौन कौन से ग्रह किस किस राशि में हैं, यह प्रमाण भी दिया गया है।

यही नहीं इसी संकल्प में आगे यह भी उल्लेख आता है कि संकल्प पृथ्वी के किस स्थान पर लिया जा रहा है व उस समय सूर्य एवं नक्षत्रों की स्थितियाँ क्या हैं।

जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्तान्र्गत ब्रह्मावर्तेक देशेबौद्धावतारे... नाम संवत्वरे (उत्तरायने/दक्षिणायने) रवि, सोम... वासरे...नक्षत्रे...राशि स्थिते सूर्ये...राशिस्थिते चन्द्र भौम गुरु...शुभ करणे...शुभ पुण्यतिथौ पूर्वाह्ने/अपराह्ने घटी /पल, सकलशास्त्र, श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तिकाम... गोत्रोत्पन्न...(नाम)...अहं सपत्निक सपुत्र/पुत्री बंधुबांधव सहितम्....देवपूजनम् करिष्यामि।

ये संकल्पविधि किस हिन्दू को नहीं मालूम ?

प्रत्यक्षं किं प्रमाणम् ??

संवत् चलाने की शास्त्रीय विधि

नवीन संवत् चलाने की शास्त्रीय विधि यह है कि जिस चक्रवर्ती सम्राट को अपने महान कर्म अथवा विजय की स्मृति के लिए अपना संवत् प्रारंभ करना हो उसे अपने राज्य की सम्पूर्ण प्रजा का ऋण स्वयं चुका कर उतने मूल्य की स्वर्ण मुद्रा राजकोष में जमा करना होती है।

सत्‌युग में ब्रह्माजी ने, त्रेतायुग में प्रभु श्रीराम और द्वापर में महाराज युधिष्ठिर ने इसी शास्त्रीय विधि से संवत् आरम्भ किये।

कलियुग में भारत का सर्वमान्य विक्रम संवत् ही एकमात्र शास्त्रसम्मत संवत् है।

क्योंकि सम्राट विक्रमादित्य ने शास्त्रीय विधि का पालन कर अपना संवत् **कृत् संवत्** के नाम से चलाया तथा कुछ ही समय मे यह **विक्रम संवत्** के नाम से प्रचलित एवं प्रतिष्ठित हो गया।

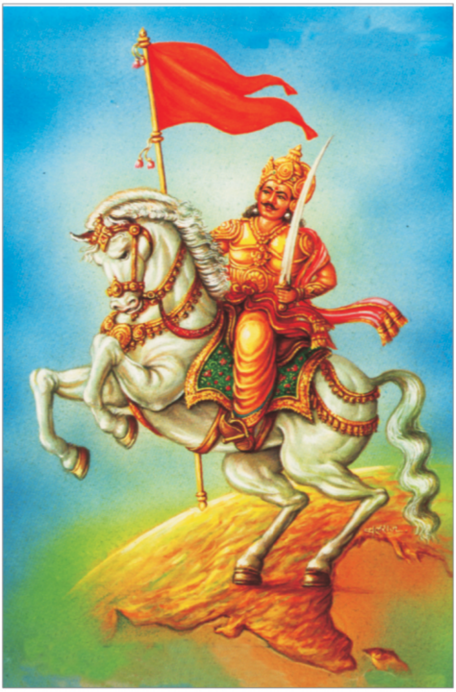

माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः ॥

भूमि मेरी माता है और मैं इस पृथ्वी का पुत्र हूँ।

भारतीय कालगणना का प्राचीनतम् केन्द्र बिन्दु
अवन्तिका (उज्जैन)

कालचक्र प्रवर्तक भगवान शिव
काल की सबसे बड़ी इकाई के अधिष्ठाता होने से **महाकाल** कहलाये।

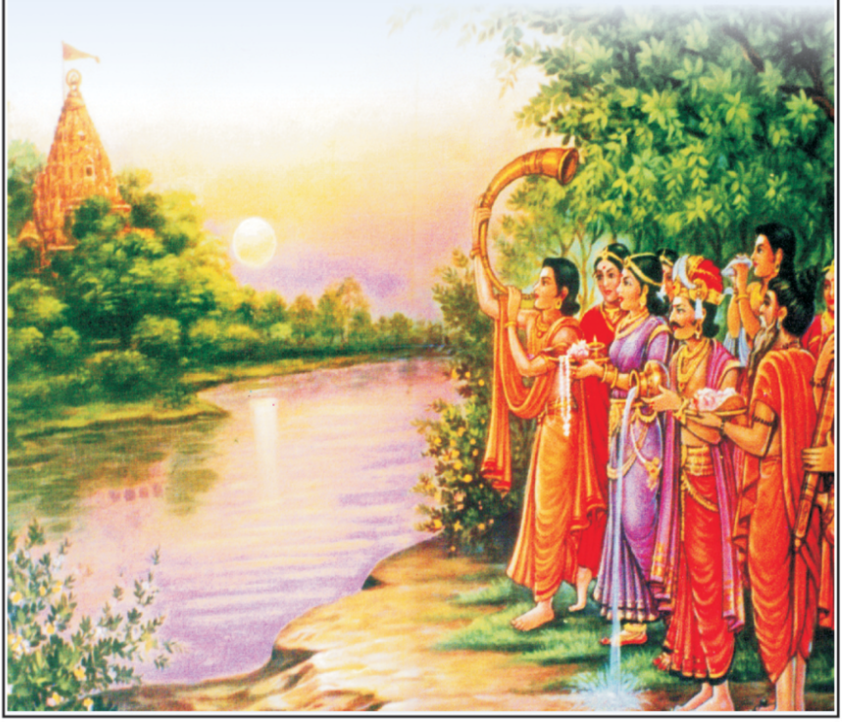

विक्रम संवत् का प्रारम्भ (शौर्य पर्व)

कलियुग में शकारि विक्रमादित्य द्वारा नए संवत् का प्रारम्भ
यह परकीय विदेशी आक्रमणकारियों से
भारत को मुक्त कराने के महा–अभियान की सफलता का प्रतीक हुआ।

....तो फिर किसे मानना चाहिए ?

जो वैज्ञानिक है......जो अटल सत्य है .....जो प्रामाणिक है !
जो हमारा है ! अपना है !!

उस वर्ष प्रतिपदा को नववर्ष

या फिर

जो अवैज्ञानिक है..... जो भ्रामक है..... जो काल्पनिक है
जो विवादग्रस्त है..... जो निराधार है .. जो अंधानुकरण मात्र है

जो पराया है थोपा गया है

उस १ जनवरी को या ऐसे ही अन्य किसी दिन को नया वर्ष ?

तोड़ कर भ्रमजाल ३१ दिसम्बर की काली अंधेरी रात का

करोड़ों वर्ष की सनातन भारतीय परम्परा 'हिन्दू नववर्ष' पर

स्वागत कीजिए नवप्रभात का

कवियों ने गाया – **जगे हम लगे जगाने विश्व, जगत में फैला तब आलोक**

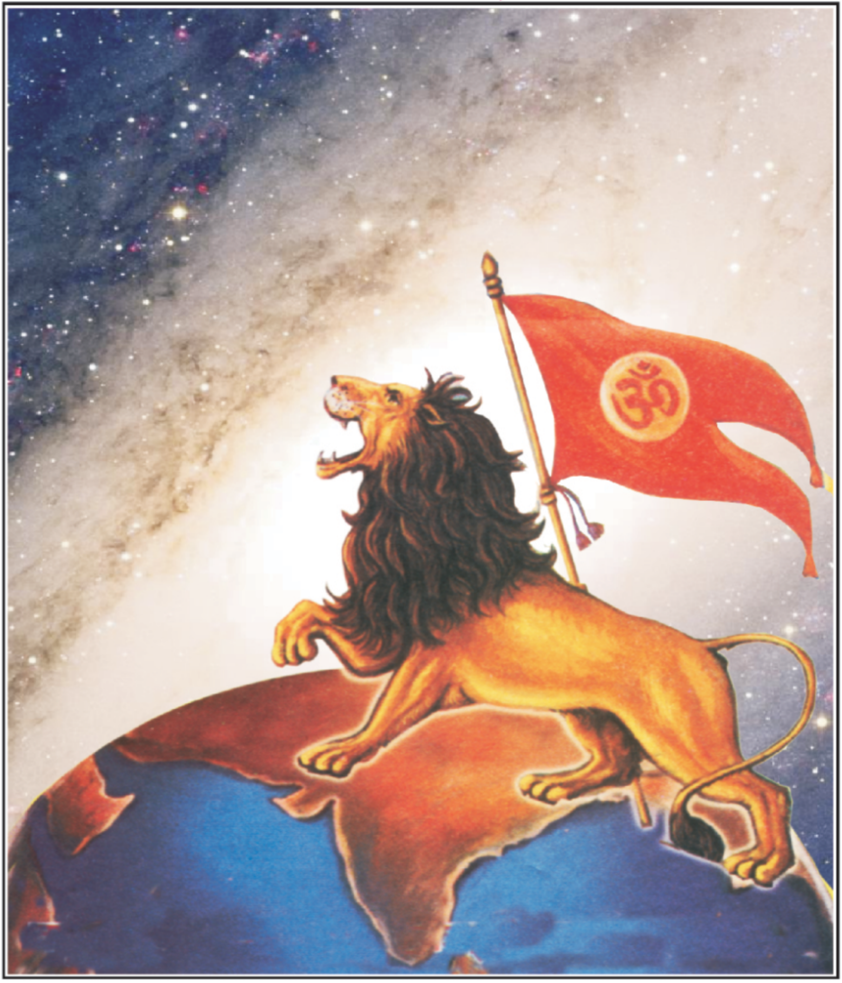

जहाँ प्रथम मानव ने खोले, निंदियारे लोचन अपने।
जिस दिन देश काल के दो दो, विस्तृत विमल वितान तने।
जिस दिन नभ में तारे जागे, जिस दिन सूरज चाँद बने।
तब से है यह देश हमारा, यह अभिमान हमारा है ।
भारत वर्ष हमारा है, यह हिन्दुस्थान हमारा है॥

नववर्ष का स्वागत कैसे करें ?

ब्रह्मपुराण पर आधारित ग्रंथ *'कथा कल्पतरु'* में कहा गया है कि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना आरम्भ की और उसी दिन से सृष्टि संवत् की गणना आरम्भ हुई। सब पापों को नष्ट करने वाली महाशान्ति उसी दिन सूर्योदय के साथ आती है।

सर्वप्रथम सृष्टिकर्ता ब्रह्मा की पूजा 'ॐ' का सामूहिक उच्चारण, नये पुष्पों, फलों, मिष्ठानों से युग पूजा और सृष्टि की पूजा करनी चाहिये। सूर्य दर्शन, सूर्यार्घ्य प्रणाम, जयजयकार, देव आराधना आदि करना चाहिये ।

परस्पर मित्रों, सम्बन्धियों, सज्जनों का सम्मान, उपहार, गीत, वाद्य, नृत्य से सामूहिक आनंदोत्सव मनाना चाहिये तथा परस्पर भेदों को साथ मिल बैठ कर समाप्त करना चाहिये। चूँकि यह ब्रह्मा द्वारा घोषित सर्वश्रेष्ठ तिथि है इसको प्रथम पद मिला है इसलिये इसे प्रतिपदा कहते हैं।

हमारा यह शास्त्रीय विधान पूर्णत: विज्ञान सम्मत है। जागरण के इस काल में हमें काल पुरुष जगा रहा है। आईये हम भी हिन्दुत्व के उगते सूरज के सम्मान और अभ्यर्थना में उठ खड़े हों।

वैदिक शुभकामना

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा:।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

महान यशस्वी इन्द्र ऐश्वर्य प्रदान करें, पूषा नामक सूर्य तेजस्विता प्रदान करें। तार्क्ष्य नामक सूर्य रसायन तथा बुद्धि द्वारा रोग-शोक का निवारण करें तथा बृहस्पति नामक ग्रह सभी प्रकार के मंगल व कल्याण प्रदान करते हुए उत्तम सुख समृद्धि से ओतप्रोत करें।

इस मंत्र में खगोल स्थित क्रान्तिवृत्त के समान चार भाग के परिधि पर समान दूरी वाले चार बिंदुओं पर पड़ने वाले नक्षत्रों क्रमश: इन्द्र, पूषा तार्क्ष्य एवं बृहस्पति अर्थात् चित्रा, रेवती, श्रवण व पुष्य नक्षत्रों द्वारा क्रान्ति वृत पर १८० अंश का कोण बनता है। यह वैदिक पुरुष द्वारा की गयी जन कल्याण की कामना है।

नूतन वर्ष मंगलमय हो

महान पुरुष जिन्होंने वर्षप्रतिपदा का मान बढ़ाया।

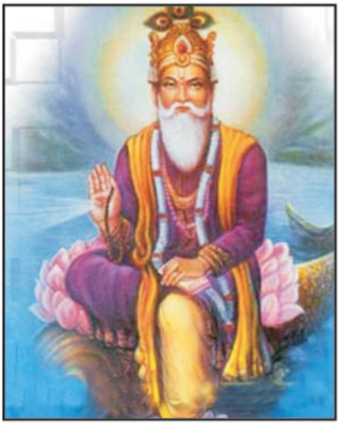

संत झूलेलालजी का जन्मदिवस

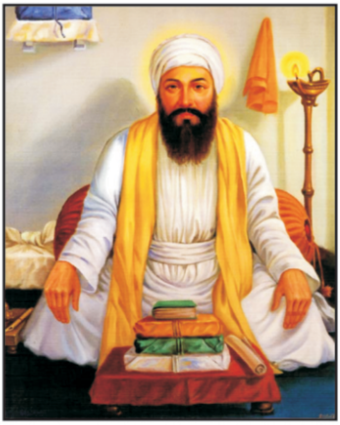

गुरु अंगददेवजी का जन्मदिवस

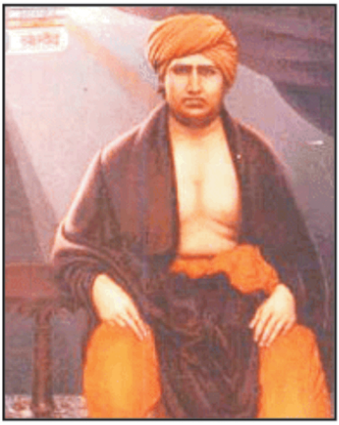

महर्षि दयानंद सरस्वती ने इसी दिन
आर्य समाज की स्थापना की

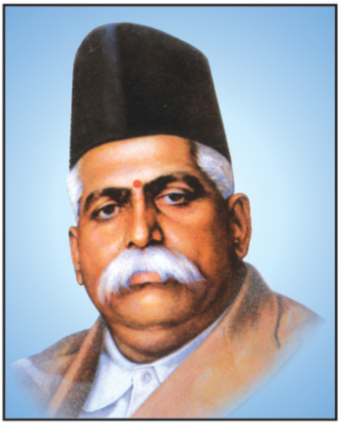

संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार
का जन्मदिवस